Content

-: बि ष या नु क्र म :-

प्रथम परिच्छेद :

(अ) नयी कविता की पृष्ठभूमि ।

(ब) समसामयिक परिवेश ।

(स) नयी कविता उद्भव एवं विकास ।

(द) नयी कविता से सम्बद्ध विविध काव्यान्दोलन ।

द्वितिय परिच्छेद :

प्रथम खण्ड

(क) वैयाकरणों एवं काव्यशास्त्रियों की भाषा-विषयक अवधारणा तथा शब्दार्थ चिन्तन ।

द्वितिय खण्ड

(ख) काव्यशास्त्र के प्रमुख सम्प्रदायों में भाषा चिन्तन-

(१) अलंकार सम्प्रदाय

(२) रीति सम्प्रदाय

(३) ध्वनि सम्प्रदाय

(४) वक्रोक्ति सम्प्रदाय

तृतिय खण्ड

(ग) पाश्चात्य साहित्य शास्त्र के विभिन्न वादों में भाषा चिन्तन-

(१) नव्यशास्त्रवाद

(२) स्वच्छन्दतावाद

(३) कलावाद

(४) प्रतीकवाद

(५) अभिव्यंजनावाद

(६) बिम्बवाद

(७) अति यथार्थवाद एवं प्रकृतवाद

(८) नयी आलोचना

तृतीय परिच्छेद :

(अ) भाषा का काव्यशास्त्रीय संदर्भ : काव्य भाषा, सामान्य बोलचाल की भाषा और काव्यभाषा में अन्तर ।

(ब) काव्य और शास्त्र : काव्यशास्त्र का अर्थ ।

(स) नये काव्यशास्त्र की संभावना : नये कवियों एवं समीक्षकों के मत ।

चतुर्थ परिच्छेद :

प्रथम खण्ड

(क) भाषा की क्रान्ति यात्रा ।

(ख) भाषा के संकट से जूझते हुए कवियों का वक्तव्य ।

द्वितीय खण्ड

(ग) नयी भाषा की तलाश ।

(घ) भाषा के बदलते तेवर :-
दांतों के बीच की जगहों में सटी हुई भाषा -
बिखरी हुई व्याकरण पस्त तनाव एवं झुंझलाहट की भाषा-
सपाट बयानी- वक्तव्य एवं पत्रकारिता की भाषा ।

पंचम् परिच्छेद :

प्रथम खण्ड

(अ) नयी कविता : भाषा का आलंकारिक वर्ण्य-वैचित्र्य ।

(ब) अलंकारों में निहित अभिव्यक्ति विधान तथा नयी कविता के कथन की नयी भंगिमाएं ;

द्वितीय खण्ड

(स) भाषा की अप्रस्तुत योजना- उपमान विधान, नयी कविता के नये उपमान ।

तृतीय खण्ड

(द) पूर्ववर्ती अलंकारों की सीमा का अतिक्रमण करती हुई कथन की नयी भंगिमाएं- बिम्ब, मिथ, मिथक, पुराकथा इतिहास रूपादि ।

चतुर्थ खण्ड

(य) प्रतीक विधान, प्रतीकों के नए प्रयोग, भाषा का प्रतीकात्मक एवं लाक्षणिक प्रयोग ।

पंचम् खण्ड

(र) लोकोक्ति एवं मुहावरे ।

kalpana's

षष्ठ परिच्छेद :

प्रथम खण्ड

(क) नयी कविता भाषा की ध्वनन एवं द्योतन शक्ति ।

द्वितीय खण्ड

(ख) भाषा की संवेदनात्मक परिणति ।

तृतीय खण्ड

(ग) भाषा का व्यंग्य एवं व्यंजना व्यापार,
आक्रोश एवं व्यंग्य ।

चतुर्थ खण्ड

(घ) अर्थाभिव्यक्ति के नये विधान ।

पंचम् खण्ड

(ङ०) भाषा का ध्वनि एवं वक्रोक्तिमूलक प्रयोग -
१- वर्ण विन्यास वक्रता एवं वर्ण ध्वनि ।
२- पद पूर्वार्द्ध वक्रता एवं पद ध्वनि ।
३- पद परार्द्ध वक्रता ।
(४) वाक्य,(वस्तु) वक्रता एवं वस्तु ध्वनि ।
(५) प्रकरण एवं प्रबन्ध वक्रता तथा प्रबन्ध ध्वनि ।

षष्ठ खण्ड

(च) वक्रता के नये आयाम -
फँटेसी, उलटवांसी, शब्द विच्छेदन, शब्द खण्डों के मध्य अन्तराल का आयोजन, एवं शब्दों का सही बटा प्रयोग,

शब्दों का लम्बीकरण, आवृत्ति, पैरेन्थीसिस, हाइफन, कामा एवं विराम चिन्हों से उत्पन्न वक्रता, गणितीय, ज्यामितीय उपकरणों एवं प्रश्न चिन्हों द्वारा उत्पन्न वक्रता ।

सप्तम परिच्छेद :

प्रथम खण्ड

(अ) नयी कविता : भाषा का सौन्दर्य विधान :-
चित्रांकन, रेखांकन, रंगयोजना

द्वितीय खण्ड

(ब) भाषा का रीतिगत सौन्दर्य -

तृतीय खण्ड

(स) नयी कविता की भाषिक संरचना : भाषा का औचित्य एवं शब्दों का उचित संग्रथन, तत्सम, तद्भव, देशज एवं विदेशी शब्दों के नये प्रयोग ।

चतुर्थ खण्ड

(द) भाषिक उपलब्धि तथा उपसंहार ।

— परिशिष्ट —